[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3227

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

पर्यावरण प्रदूषण का मानव स्वास्थ्य पर बढ़ता दुष्प्रभाव : एक अध्ययन

वीणा अत्रे
एम.जे.बी. शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य का अत्यंत घनिष्ठ सम्बन्ध है। आज औद्योगीकरण के दौर में पर्यावरण ही दूषित है तो स्वच्छ भोजन पानी एवं वायु की कल्पना कैसे ही जा सकती है। इसके फलस्वरूप मनुष्य में अनेक रोगों का जन्म होता है। पर्यावरण के मुख्य तत्व भूमि, जल, वायु, वनस्पति एवं प्राणी समूह है।

जल एवं स्वास्थ्य : कल कारखानों का दूषित जल नदी नालों में मिलकर अत्यधिक जल प्रदूषित करता है। प्रदूषित जल पीने से त्वचा रोग, पोलियो, पीलिया, टाईफाईड, बुखार, पेचिस, अतिसार, कृमि लेप्टोस्पाईस, केंसर, दंतक्षय, फ्लूओरोसिस, गर्भपात, मंद विकास जैसी बीमारियों को जन्म देते हैं। पेयजल में क्लोराइड की अधिक मात्रा के सेवन से व्यक्ति के दाँतों में काले धब्बे पड़ जाते है' रीढ़ की हड्डी तथा जोड़ों की हड्डी जकड़ जाती है। भारत में प्रदूषित जल में स्नान करने से त्वचा रोगियों की संख्या बढ़ रही है।

वायु प्रदूषण :हवा में अवांछित गैसों की उपस्थिति से वायु प्रदूषण होता है। कल कारखानों और मोटर वाहनों से निकलने वाले धुएँ के कारण साँस लेने में कठिनाई होती है। वायु में यदि हाइड्रोकार्बन की मात्रा बढ़ती है तो दृष्ट शक्ति में कमी, सल्फरडाई आक्साइड की मात्रा बढ़ती है तो दमा जैसे रोग, कार्बनमोनो आक्साइड प्रदूषक से रक्त में ऑक्सीजन की कमी के कारण केन्द्रीय स्नायुतंत्र प्रभावित होता है। इस प्रकार वायु प्रदूषण असाध्य रोगों को जन्म देते है। खाँसी, त्वचारोग, जननिक विकृति का उत्पन्न होना जीन परिवर्तन, आनुवांशिकीय खतरे बढ़े है।

भूमि प्रदूषण :जमीन पर जहरीले अवांछित और अनुपयोगी पदार्थों को भूमि में विसर्जित करने से है। मृदा प्रदूषण से आँत सम्बन्धी रोग टिटेनस, पीलिया, बाटूलिज्म, गिल्टी बनना, ल्यूकेमिया, किडनी को हानि पहुँचाना, लीवर को दूषित करने जैसे रोग होते हैं।

ध्वनि प्रदूषण :कल–कारखाने, यातायात, मोटरगाडियाँ, लाउड स्पीकरों की कर्ण बेध ध्वनि ने नींद में व्यवधान, चिडचिड़ापन, गुस्सा, श्रवण कठिनाई, बहरापन, सरदर्द, उच्च रक्तचाप, हृदय और मस्तिष्क रोग, कोलोस्ट्राल बढ़ाने, गैस्टीक अल्सर पैदा करने, भूख कम करने एवं मस्तिष्क रोग उत्पन्न होते है। रेडियोधर्मी सभी प्रकार के प्रदूषण से भिन्न है। रेडियोधर्मी प्रदूषण से मानव शरीर पर कई प्रत्यक्ष तथा दूरगामी, प्रभाव पड़ते हैं जैसे शरीर में रूधिर कणिकाओं की कमी, कैंसर, उल्टी तथा शरीर का वजन कम होना, अल्सर जैसी घातक बीमारियों के होने का भय रहता है। रेडियोधर्मी प्रदूषण के कारण जापान में आज भी अपंग बच्चे उत्पन्न होते है। वायुमंडल में पीएएन गैस की उपस्थिति से आँखों तथा श्वाँस नली के रोग अधिक पाये जाते है। इस गैस से पौधों का भी अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

जलवायु और मानव स्वास्थ्य : कार्बन डाईआक्साईड की मात्रा पर्यावरण में बढ़ने से शरीर में रक्त संचालन बढ़ जाता है। अपचन, आलस्य, रक्त की कमी, तापघात, चेचक, मलेरिया, प्लेग जैसी बीमारियाँ पैदा होती है। ओजोन परत के क्षय होने से कैंसर, त्वचा का जलना आनुवांशिकी दुष्परिणाम होते है। कोयले की खानों तथा रासायनिक उद्योगों से निकलने वाली गैसे जहाँ एक ओर एग्जीमा, मुँह से श्वासनली के तथा आँखों के रोग उत्पन्न करती है वहीं दूसरी ओर भयंकर जनहानि भी करती है।

म.प्र. के भोपाल नगर में स्थित एक अमरीकी फर्म मिक नामक जहरीली गैस (दिसम्बर 1984) एक ज्वलंत उदाहरण है। लगभग 2600 व्यक्तियों की मृत्यु तथा 10,000 व्यक्तियों की आँखों तथा त्वचा को पूरी तरह प्रभावित किया। विश्व में वायुप्रदूषण द्वारा यह भयंकर विनाश था। औद्योगिकृत एवं नगरीय क्षेत्रों में प्रदूषक

तत्वों से कोहरा उत्पन्न हो जाता है जो निवासियों के लिए घातक सिद्ध होता है। वातावरण में व्याप्त प्रदूषणों की मात्रा ने जलवायु तथा मिट्टी को विषैला बना दिया है। पर्यावरण प्रदूषण के कारण मौसम का चक्र बिगड़ा है। प्राकृतिक प्रकोपों का कारण भी प्रदूषण है।

विश्व के विकसित एवं विकासशील राष्ट्रों में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशक पदार्थो का कृषि क्षेत्र में प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है। उसका भी स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। संयुक्त राष्ट्र के एक प्रतिवेदन में यह कहा गया है कि वर्तमान में प्रदूषित जल पीने से प्रतिदिन 40,000 से अधिक लोग मर जाते है।

पर्यावरण एवं स्त्री स्वास्थ्य :भोजन जल में लेड की मात्रा अधिक हो तो गर्भपात एवं मनोराग जैसी व्याधि आती है। पारा भी गर्भपात के लिए उतरदायी है साथ ही मासिक धर्म की अनियमितता से बच्चों में विकृति आती है। यदि केडमियम की मात्रा अधिक हो तो गर्भ का विकास मंद गति से होता है इसी तरह सेलेनियम भी गर्भपात हेतु उतरदायी व कीटनाशक भी प्रजनन क्षमता को प्रभावित करते है। डायोप्सेंस, गर्भपात, जन्मजात विकृति एवं मृत शिशु के जन्म के लिए उत्तरदायी है।

पॉली क्लोरिनेटेड, बाई फिनाइल, शिशु के मंद विकास एवं जन्मजात मनोरोग का कारण बनती है। कृमिनाशक दवाईयाँ गर्भपात, खरपतवार को नष्ट करने वाली दवाईयाँ, मृत प्रसव, जन्मजात विकृति एवं मासिक धर्म को प्रभावित करती है बेन्जीन की अधिकता से रक्त की कमी हो जाती है कार्बनमोनो आक्साईड बढ़नेसे भ्रूण मृत्यु एवं मस्तिष्क को अति पहुँचाता है ओजोन की अधिकता से गर्भपात एवं जन्मजात विकृतियाँ बच्चे में हो जाती है एक्सरे से गर्भस्थ शिशु को क्षति पहुँचती है। 29% महिलाओं के दूध में कीटनाशक के अंश मान्य सर्वोच्च सीमा से अधिक पाये गये। डी.डी.ई. की साध्रंता अधिक होने से महिलाओं में स्तन कैंसर होता है। ईंधन के प्रदूषण से कुपोषण, मंद बुद्धि, फेफड़े एवं नेत्र रोग प्रभावित होते है।

नगरीय क्षेत्र में प्रदूषण के प्रभाव : नगरों में ग्राम की अपेक्षा पर्यावरण प्रदूषण ज्यादा है। कल–कारखानों का धुँआ, परिवहन में ईधन का धुँआ पर्यावरण को प्रदूषित कर मनुष्य की बीमारियों को प्रभावित कर रहा है मानव सिरदर्द, आँखों के रोग, खाँसी सर्दी छाती में दर्द आदि रोगों से ग्रसित हो रहा है। G- 20 देश के 20 सबसे प्रदूषित शहरों में 13 भारत के है। WHO सर्वे के मुताबिक भारत को प्रत्येक वर्ष पर्यावरण क्षरण के कारण 80 अरब डॉलर का नुकसान होता है।

सुझाव

- जमीनी स्तर पर काम शुरु करना होगा।
- घरों में ऊर्जा संरक्षण के साधन बिजली पानी बचाएँ व जल संरक्षण किया जाय पर सही तरीके और विकल्प नहीं अपनाएँ जाते।
- प्रकृति और आधुनिकता का रखे संतुलन।
- काँच के बर्तनों में भोजन को माइक्रोवेव में पकाना अधिक सेहतमंद है।
- प्राकृतिक प्रकाश की बेहतर व्यवस्था रखें पर तेज प्रकाश न रखे।
- कर्ण प्रिय संगीत रचनात्मकता बढ़ाता है वही तेज संगीत सरदर्द और असाध्य रोगियों की जान ले सकता है।
- विकास के सभी मॉडल पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते है इसलिए विकास और पर्यावरण के सह अस्तित्व के मॉडल पर जोर दिया जाना चाहिये।
- घरों में CFL/LED लाईट लगाएँ।
- सोलर सिस्टम का उपयोग करें।
- घर बनाने में ईंट के बजाय एएसीब्लाक उपयोग करें।
- साईकिल का उपयोग करें।
- नमक,नींबू और बेकिंग सोड़े से हेल्दी साफ सफाई करें।

- वेस्ट से बेस्ट – कचरे से मुक्ति ईधन की समस्या का हल होने के साथ ही कच्चा तेल बनाया जा सकेगा।
- समुद्र के पानी को पीने योग्य बनाना एक समाधान है।
- ओटेक टेक्नालॉजी से बिजली बनाई जाएँ।
- बायोरिमेडिएशन विधि से दूषित पानी को बेक्टेरिया की मदद से साफ किया जा सकता है।
- छत पर बगीचे लगाएँ जाएँ।
- आटो और लोक परिवहन में सीएनजी का इस्तेमाल किया जाएं।
- सूरज से स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग किया जा सकता है।
- उद्योगों में प्रदूषण के नियन्त्रण के लिए ईकोफ्रेंडली उपकरण और वाहनों में एडवांस डिजाईन के ईजन लगाएँ जाएं।
- कचरा प्रबन्धन को लेकर जागरूकता बढ़ाई जाएं।
- ई–रिक्शा को बढ़वा दिया जाएं।
- सरकार और गैर सरकारी तंत्र की सक्रियता से ही पर्यावरण को बचाया जा सकता है।
- समाज में आम लोगों व किसान समुदाय में इतनी जागरूकता नहीं आई है कि वह आगे रहकर कोई मुहिम चलाएँ।

निष्कर्ष

पर्यावरण को लेकर देश और दुनिया में जागरूकता बढ़ी है गंभीर चर्चाएँ भी हो रही है। टेलीविजन, अखबारों, विभिन्न संचार माध्यमों के जरिये से लोगों को जागरूक बनाया जा रहा है। केवल पौधा लगाने से ही ग्रीन इंडिया मिशन पूरा नहीं होता है। व्यक्ति पौधों को संरक्षित करेगा तभी इसका मूल उद्देश्य हरा भरा भारत बनाने में सफलता मिलेगी।

ग्लोबलवार्मिंग समस्या का हल सिर्फ सौर ऊर्जा से ही निकल सकता है। घर से खेत खलिहान और उद्योगो तक इन्हें लगाने की जरूरत है। ई–कबाड़ से मुक्ति पाएँ, स्वास्थ्य व पर्यावरण सुरक्षित बनाएँ।

किसी भी काम की सफलता की गारंटी के लिए जरूरी है। काम स्वविचारित हो, सुविचारित हो और अंतः प्रेरित हो। पर्यावरण सुधार में सवा सौ करोड़ लोग छोटे–छोटे कदम भी उठाएँ तो बड़ा परिवर्तन आ सकता है और यही हमारी ताकत बन सकती है।

संदर्भ

1. *जोशी डॉ. रतन, पर्यावरण अध्ययन, 2014*
2. *कोठारी डॉ. मिलिंद, पर्यावरण शिक्षा प्रथम संस्करण*
3. *नवबोध शिक्षा समिति द्वारा संपादित 2014 पृष्ठ 45*
4. *सक्सेना डॉ. एस.एम. मोहन डॉ. सीमा 2013*
5. *शर्मा डॉ. राजीव, शर्मा पंकज 2013 पृष्ठ 87*
6. *सिद्दीकी डॉ. अनीस, शर्मा डॉ. राजीव, शर्मा पंकज 2012*
7. *तिवारी डॉ. एन.के., शुक्ला शशी 2010 पृष्ठ 87*
8. *दैनिक भास्कर दिनांक 5.6.15*
9. *नई दुनिया दिनांक 5.6.15 व 2.8.15*
10. *पत्रिका 5.6.15 पृष्ठ 2,5,10*
11. *इन्टरनेट से प्राप्त जानकारी*